International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
(Volume 06, Issue 01)
Publishing Month: April 2014
An Indexed and Referred Journal with Impact Factor: 2.75
ISSN: 2347-601X
www.ijemhs.com

भारतीय पुनर्जागरण : सामाजिक–धार्मिक सुधार आन्दोलन की प्रकृति एवं स्वरूप : एक विश्लेषण

डॉ. प्रदुमन सिंह

सहायक प्रवक्ता (इतिहास विभाग)
राजकीय महिला महाविद्यालय, रोहतक

प्रकाशन की तिथि: अप्रैल 08, 2014

परिचय

सामान्य शब्दों में पुनर्जागरण का अर्थ है किसी ज्ञान को दोहराना या उसका फिर से जन्म होना। उन्नीसवीं सदी में हुए सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन एक विशेष परिस्थितियों का परिणाम रहे हैं। भारत में विदेशी शासन के अर्न्तगत पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से नए विचारों, ईसाई धर्म का आगमन, नई औपनिवेशिक संस्कृति के कारण भारतीयों को अपनी संस्कृति की सुरक्षा व समाज में सामाजिक, धार्मिक कमजोरियों व बुराईयों को दूर करने के लिए जागरूक भारतीयों ने, जैसे राजा राम मोहन राय, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद जी आदि द्वारा सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन की आवश्यकता महसूस हुई।

मूल शब्द *: सामाजिक धार्मिक सुधार, पुनरूत्थान, बुद्धिवादी प्रवृति।*

उद्देश्य

(1) सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन की विशेषताएं।

(2) प्राचीन भारतीय संस्कृति का उत्थान।

(3) समाज की भलाई।

(4) आंदोलन की प्रकृति व स्वरूप का विश्लेषण।

(5) मुख्य समाज सुधारक नेता।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से द्वितिय स्त्रोतो से प्राप्त तथ्यों पर आधारित है। शोध सामग्री सन्दर्भ पस्तकों, पत्रिकाओं से ली गई है। शोध कार्य मुख्यतः विश्लेषणात्मक विधियों पर आधारित है।

आंदोलन के कारण

(प) औपनिवेशिक शासन का प्रभाव।

(पप) पश्चिमी जगत के विचारों व संस्कृति से सम्पर्क पश्चिमी में हुई बौद्धिक व वैज्ञानिक प्रगति के सम्पर्क में आए।[1]

(पपप) स्वतंत्रता, मानवता, समानता, बंधुत्व आदि आधुनिक विचारों से प्रभावित।

(पअ) अंग्रेजी शिक्षा व अंग्रेजी प्रशासन, नए प्रबन्ध वर्ग वकील, अध्यापक, डॉक्टर आदि का उदय के कारण।[2]

(अ) विदेशियों द्वारा भारतीय सभ्यता को निकृष्ट तथा पिछड़ा घोषित किए जाने के फलस्वरूप शिक्षित भारतीयों में रोष के साथ।

(अप) भारतीय समाज में फैली धार्मिक बुराईयों के कारण 19वीं सदी का भारत धार्मिक अंधविश्वासों के जाल में।[3]

(अपप) भारतीय समाज में फैली धार्मिक सामाजिक बुराईयों के कारण 19वीं सदी का भारत धार्मिक अंधविश्वासों के साथ में।[3]

(अपपप) आधुनिक शिक्षा, समाचार पत्रों के प्रकाशन, आधुनिक

International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
(Volume 06, Issue 01)
Publishing Month: April 2014
An Indexed and Referred Journal with Impact Factor: 2.75
ISSN: 2347-601X
www.ijemhs.com

संस्थाओं के जैसे (ऐशियाटिक सोसायटी) आदि के कारण।

सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन की प्रकृति व स्वरूप (धार्मिक रंग से सामाजिक कुरीतियों का समाधान)

(प) सामाजिक कुरीतियों का समाधान धार्मिक सुधारों द्वारा किया गया। भारत में धार्मिक सुधारों के बगैर सामाजिक सुधार अर्थहीन था क्योंकि सामाजिक बुराईयों को धर्म से आधार प्राप्त था तथा मनुष्य का सामाजिक जीवन बहुत कुछ धार्मिक विचारों एवं मान्यताओं से प्रभावित था।[4]

(पप) पूर्णतः पुनर्जागरण आन्दोलन नहीं, उन्नीसवीं सदी के इस आंदोलन को भारतीय पुर्नजागरण कहा गया लेकिन इस आंदोलन को मध्यकाल व आधुनिक काल के बीच संक्रमण का चरण घोषित किया गया।[5]

(पपप) इन आंदोलनो का पाश्चात्य तत्वों के साथ बड़ा विरोधाभाषी संबंध रहा। एक तरफ पाश्चात्य कारणों से नवीन चेतना का विकास हुआ दूसरी तरफ इन नवीन चेतना ने पाश्चात्य विरासत को चुनौती देने में बड़ी भूमिका रही।

(पअ) पाश्चात्य व देशी तत्वों का मिश्रण लेकिन मूल देशी तत्व : हालांकि इन आंदोलनों में पाश्चात्य एवं देशी तत्वों के बीच मिश्रण देखा जा सकता है। अर्थात् सुधार की आरम्भिक प्रेरणा

International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
(Volume 06, Issue 01)
Publishing Month: April 2014
An Indexed and Referred Journal with Impact Factor: 2.75
ISSN: 2347-601X
www.ijemhs.com

पश्चिमी विचारधारा से प्राप्त हो लेकिन शीघ्र ही आन्तरिक प्रेरणा व मूल देशी प्राचीन भारतीय संस्कृति के तत्वों की भूमिका रही।

(अ) सुधारकों का उद्देश्य भारतीय विरासत को अस्वीकार करना नहीं था अपितु सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में आई कुरीतियों को दूर करना था अर्थात ऐसे समाज की स्थापना करना था जो नई आधुनिक युग की चुनौतियों का सामना कर सके।

(अप) विरोधात्मक विचारधाराः 19वीं सदी में हुआ सांस्कृतिक वैचारिक संघर्ष दो मोर्चो पर चला था। एक तरफ पारम्परिक संस्कृति के प्रतिगामी तत्वों से जुझ रहा था, दूसरी तरफ सरकार द्वारा संरक्षित औपनिवेशिक संस्कृति और विचारधारा से।

(अपप) आधुनिकरण पर जोर : इन आंदोलनों को पूर्णतः पश्चिमीकरण की प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जा सकता है। इनमें पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण का दृष्टिकोण गायब था। सुधारों की प्रकृति को आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है।

(अपपप) धार्मिक सार्वभौमिकवाद : उपर्युक्त आंदोलन की प्रवृति धार्मिक सार्वभौमिकवाद की थी सुधारक ने धर्म विशेष से

संबद्ध होने के बावजूद मानवीय संदर्भो में धार्मिक मूल्यों की परख की।

(पग) सुधार आंदोलन का स्वरूप मूलतः प्रगतिशील था लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता, मानवतावाद पर बल दिया गया, ब्रहम समान व रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रगतिशील स्वरूप। मनुष्य के विकास पर बल दिया गया।[8] धर्म को मानव के कल्याण से जोड़ा गया व धार्मिक मान्यताओं को मानव कल्याण से जोड़ा गया। बुद्धिक विवेक के आधार पर धार्मिक मान्यताओं को कसौटी पर कसा गया। मानव कल्याण के खिलाफ मान्यताओं का विरोध किया गया।

(ग) प्रगतिशील व पुनरूत्थानवादी स्वरूप भी कुछ संस्थाओं व सुधारको की दृष्टि प्रगतिशील जैसे ब्रहम समाज, प्रार्थन समाज आदि जबकि कुछ की दृष्टि पुनरूत्थानवादी थी जैसे आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, अहमदिया आन्दोलन।

(गप) शैक्षणिक क्षेत्र में पुनर्जागरण : भारतीय पुनर्जागरण का प्रभावशाली स्वरूप शैक्षणिक क्षेत्र में था।[9] सुधार आंदोलन में लोकप्रिय शिक्षा व महिला शिक्षा पर बल दिया शिक्षा का मानव की प्रगति का साधन माना गया। देश में स्कूल कॉलेज खोलने पर जोर दिया गया व समाचार पत्रों द्वारा लोगो

में जागरूकता पैदा की गई।

(गपप) इन सुधार आंदोलनों में जीवन के व्यावहारिक व उपयोगवादी पहलुओ पर जोर दिया गया।[10] मानव प्रगति में बाधक सभी सामाजिक व धार्मिक बुराईयों का कड़ा विरोध किया गया। अंधविश्वासों के खिलाफ लोगों में जागृति पैदा की गई।

(गपपप) सभी सुधार आंदोलन कुछ सीमाओं तक राजनीतिक चेतना लाने में भी सहायक हुए। स्वामी दयानन्द जी ने स्वराज पर जोर दिया व राजा राम मोहन राय ने मौलिक अधिकारों पर जोर दिया स्वामी विवेकानन्द व डेरानियों ने देश वासियों में राष्ट्रवाद के प्राण फूंके।

(पग) राजनीतिक संबंध : कुछ सीमा तक विधि व कानून को भी प्रभावित करने का प्रयत्न किया गया इसलिए यह मध्ययुगी, आन्दोलन से भिन्न रहा राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया गया।

(ग) तात्कालिक सामाजिक सांस्कृतिक ढांचे के अर्न्तगत ही परिवर्तन की बात की गई न कि संरचनात्मक परिवर्तन की। यह तात्कालिक ढांचे की समाप्ति न होकर उसमें व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास था।

(गप) 19वीं सदी के आन्दोलन में व्यावहारिकता की प्रवृति दिखाई देती है जिसमें

मानव जीवन को उच्च उठाने पर बल दिया गया धर्म व दर्शन के औचित्य को मानव जीवन को सुखी बनाने से जोड़ा गया धर्मिक पुस्तको व ग्रंथों की सार्थकता को तर्क से प्रमाणो से परखा गया।

(गपप) राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद ने भारतीयों में राष्ट्रीयता के बीज बोए।

निष्कर्ष

भारतीय पुर्नजागरण आंदोलन मुख्यतः प्रगतिशील, प्राचीन गौरवपूर्ण अतीत की पुनः स्थापना, धार्मिक कुरीतियों को दुर करना, धर्म की बुराईयों को प्राचीन बौद्धिक ज्ञान विज्ञान के तर्को से जांचना। पाश्यात्य आधुनिक विचारों से प्रबुद्ध वर्ग ने अपने समाज की कमजोरियों का पता चला। उलको सुधारने के लिए मूल प्रेरणा प्राचीन वैदिक ज्ञान विज्ञान से ली। इस आंदोलन का प्रभाव हालांकि ज्यादा व्यापक नहीं था लेकिन फिर भी लोगो में जागृति पैदा हुई मानव कल्याण विवेक, बुद्धि, नारी उत्थान, शिक्षा को बढ़ावा मिला। धार्मिक अन्धविश्वासों में कमी आई। नई चेतना का विकास हुआ। सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गो के हितों को महत्व प्राप्त हुआ। आगे चलकर इन्हीं तत्वों से आधुनिक भारत का निर्माण हुआ।

संदर्भ सूची

(1) कुंवर दिग्विजय सिंह आधुनिक भारत का इतिहास स्मगप स्मगपे पृ.सं. 136।

(2) के. गोपालन आधुनिक भारत एन.सी.ई.आर.टी. पृ. 34।

(3) मणिकांत सिंह, भारतीय इतिहास एक विश्लेषण, किताब महल, पृ. 238।

(4) मणिकांत सिंह भारतीय इतिहास एव विश्लेषण, किताब महल, पृ. 238।

(5) कुंवर दिग्विजय सिंह, आधुनिक भारत का इतिहास, स्मगपे छमगपेए पृ.सं. 13।

(6) बी.एल. ग्रोवर, यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, पृ.सं. 27।

(7) प्रो. विपिन चन्द्र आदि, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ.सं. 28।

(8) प्रताप सिंह, आधुनिक भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, जयपुर, पृ.सं. 111।

(9) कुंवर दिग्विजय सिंह, आधुनिक भारत का इतिहास स्मगपे छमगपेए पृ.सं. 137।